२.दो लघुकथाएँ

-नरेंद्रकौर छाबड़ा

(पूरक पठन)

कंगाल

इस वर्ष बड़ी भीषण गरमी पड़ रही थी । दिन तो अंगारे से तपे रहते ही थे, रातों में भी लू और उमस से चैन नहीं मिलता था । सोचा इस लिजलिजे और घुटनभरे मौसम से राहत पाने के लिए कुछ दिन पहाड़ों पर बिता आएँ ।

अगले सप्ताह ही पर्वतीय स्थल की यात्रा पर निकल पड़े । दो-तीन दिनों में ही मन में सुकून-सा महसूस होने लगा था । वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य, हरे-भरे पहाड़ गर्व से सीना ताने खड़े, दीर्घता सिद्ध करते वृक्ष, पहाड़ों की नीरवता में हल्का-सा शोर कर अपना अस्तित्व सिद्ध करते झरने, मन बदलाव के लिए पर्याप्त थे ।

उस दिन शाम के वक्त झील किनारे टहल रहे थे। एक भुट्टेवाला आया और बोला-''साब, भुट्टा लेंगे। गरम-गरम भूनकर मसाला लगाकर दूँगा । सहज ही पूछ लिया-''कितने का है ?''

''पाँच रुपये का ।''

''क्या ? पाँच रुपये में एक भुट्टा । हमारे शहर में तो दो रुपये में एक मिलता है, तुम तीन ले लो ।''

''नहीं साब, ''पाँच से कम में तो नहीं मिलेगा ...''

''तो रहने दो...'' हम आगे बढ़ गए ।

एकाएक पैर ठिठक गए और मन में विचार उठा कि हमारे जैसे लोग पहाड़ों पर घूमने का शौक रखते हैं हजारों रुपये खर्च करते हैं, अच्छे होटलों में रुकते हैं जो बड़ी दूकानों में बिना दाम पूछे खर्च करते हैं पर गरीब से दो रुपये के लिए झिक-झिक करते हैं, कितने कंगाल हैं हम ! उल्टे कदम लौटा और बीस रुपये में चार भुट्टे खरीदकर चल पड़ा अपनी राह । मन अब सुकून अनुभव कर रहा था ।

परिचय

परिचय : नरेंद्रकौर छाबड़ा जानी-मानी कथाकार हैं । कहानियों के साथ-साथ आपने बहुत-सी लघुकथाएँ भी लिखी हैं । आपकी लघुकथाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से स्थान पाती रही हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'मेरी चुनिंदा लघुकथाएँ' आदि ।

गद्य संबंधी

यहाँ दो लघुकथाएँ दी गई हैं । प्रथम लघुकथा में लेखिका ने यह दर्शाया है कि जब हम बड़ी दूकानों, मॉल, होटलों में जाते हैं तो कोई मोल-भाव नहीं करते, चुपचाप पैसे दे, सामान ले, चले आते हैं । इसके उलट जब हम रेहड़ीवालों, फेरीवालों से सामान खरीदते हैं तो मोल-भाव करते हैं, हमें इस सोच से बचना चाहिए ।

दूसरी लघुकथा में लेखिका ने रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार पर करारा व्यंग्य किया है । यहाँ लेखिका ने दर्शाया है कि सत्य का पालन ही लक्ष्य तक पहुँचने में सहायक होता है ।

सही उत्तर

अब तक वह कितने ही स्थानों पर नौकरी के लिए आवेदन कर चुका था। साक्षात्कार दे चुका था। उसके प्रमाणपत्रों की फाइल भी उसे सफलता दिलाने में नाकामयाब रही थी। हर जगह भ्रष्टाचार, रिश्वत का बोलबाला होने के कारण, योग्यता के बावजूद उसका चयन नहीं हो पाता था। हर ओर से अब वह निराश हो चुका था। भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को कोसने के अलावा उसके वश में और कुछ तो था नहीं।

आज फिर उसे साक्षात्कार के लिए जाना है। अब तक देशप्रेम, नैतिकता, शिष्टाचार, ईमानदारी पर अपने तर्कपूर्ण विचार बड़े विश्वास से रखता आया था लेकिन इसके बावजूद उसके हिस्से में सिर्फ असफलता ही आई थी।

साक्षात्कार के लिए उपस्थित प्रतिनिधि मंडल में से एक अधिकारी ने पूछा-''भ्रष्टाचार के बारे में आपकी क्या राय है ?''

''भ्रष्टाचार एक ऐसा कीड़ा है जो देश को घुन की तरह खा रहा है। इसने सारी सामाजिक व्यवस्था को चिंताजनक स्थिति में पहुँचा दिया है। सच कहा जाए तो यह देश के लिए कलंक है... ।'' अधिकारियों के चेहरे पर हलकी-सी मुसकान और उत्सुकता छा गई। उसके तर्क में उन्हें रुचि महसूस होने लगी। दूसरे अधिकारी ने प्रश्न किया-''रिश्वत को आप क्या मानते हैं ?''

''यह भ्रष्टाचार की बहन है जैसे विशेष अवसरों पर हम अपने प्रियजनों, परिचितों, मित्रों को उपहार देते हैं। इसका स्वरूप भी कुछ-कुछ वैसा ही है लेकिन उपहार देकर हम केवल खुशियों या कर्तव्यों का आदान-प्रदान करते हैं। इससे अधिक कुछ नहीं जबकि रिश्वत देने से रुके हुए कार्य, दबी हुई फाइलें, टलती हुई पदोन्नति, रोकी गई नौकरी आदि में इसके कारण सफलता हासिल की जा सकती है। तब भी यह समाज के माथे पर कलंक है, इसका समर्थन कतई नहीं किया जा सकता, ऐसी मेरी धारणा है।'' कहकर वह तेजी से बाहर निकल आया। जानता था कि यहाँ भी चयन नहीं होगा।

पर भीतर बैठे अधिकारियों ने... गंभीरता से विचार-विमर्श करने के बाद युवक के सही उत्तर की दाद देते हुए उसका चयन कर लिया। आज वह समझा कि 'सत्य कुछ समय के लिए निराश हो सकता है, परास्त नहीं।'

('मेरी चुनिंदा लघुकथाएँ' से)

—— o ——

बालक/बालिकाओं से संबंधित कोई ऐतिहासिक कहानी सुनकर उसका रूपांतरण संवाद में करके कक्षा में सुनाइए।

पहाड़ों पर रहने वाले लोगों की जीवन शैली की जानकारी प्राप्त करके अपनी जीवन शैली से उसकी तुलना करते हुए लिखिए।

अपनी पसंद की कोई सामाजिक ई-बुक पढ़िए।

'शहर और महानगर का यांत्रिक जीवन' विषय पर बातचीत कीजिए।

शब्द संसार

भीषण वि.(सं.) = भयानक
लिजलिजे वि.पुं.(अ.) = सीलनभरा
नीरवता स्त्री.सं.(सं.) = एकांत, एकदम शांत
कंगाल वि.(हिं.) = गरीब, निर्धन
साक्षात्कार पुं.सं.(सं.) = मुलाकात
रिश्वत स्त्री.सं.(अ.) = घूस

मुहावरे

सीना तानकर खड़े रहना = निर्भय होकर खड़े रहना
बोलबाला होना = प्रभाव होना
दाद देना = प्रशंसा करना

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

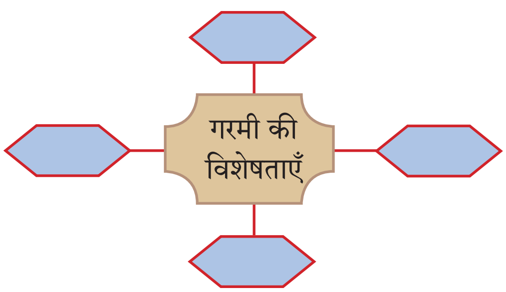

(२) उत्तर लिखिए :

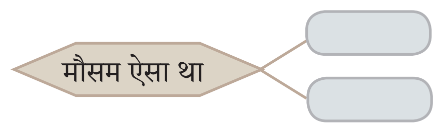

(३) कारण लिखिए :

१. युवक को पहले नौकरी न मिल सकी ....
२. आखिरकार अधिकारियों द्‌वारा युवक का चयन कर लिया गया ....

(४) कृति पूर्ण कीजिए :

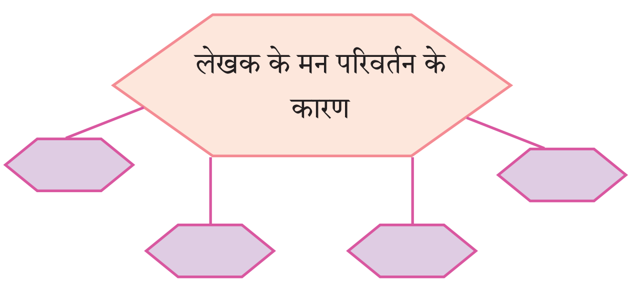

(५) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

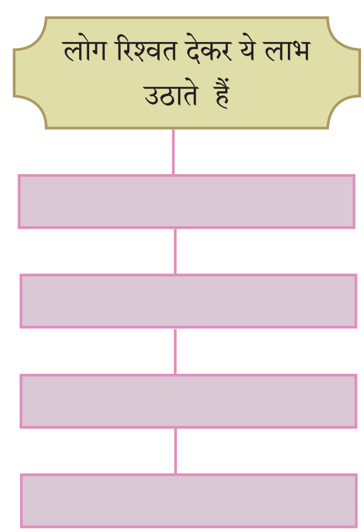

अभिव्यक्ति 'भ्रष्टाचार एक कलंक' विषय पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) अर्थ के आधार पर निम्न वाक्यों के भेद लिखिए :

१. क्या पैसा कमाने के लिए गलत रास्ता चुनना उचित है ?
२. इस वर्ष भीषण गरमी पड़ रही थी ।
३. आप उन गहनों की चिंता न करें ।
४. सुनील, जरा ड्राइवर को बुलाओ ।
५. अपने समय के लेखकों में आप किन्हें पसंद करते हैं ?
६. सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन किया ।
७. हाय ! कितनी निर्दयी हूँ मैं ।
८. काकी उठो, भोजन कर लो ।
९. वाह ! कैसी सुगंध है ।
१०. तुम्हारी बात मुझे अच्छी नहीं लगी ।

(२) कोष्ठक की सूचना के अनुसार निम्न वाक्यों में अर्थ के आधार पर परिवर्तन कीजिए :

१. थोड़ी बातें हुई । (निषेधार्थक वाक्य)
२. मानू इतना ही बोल सकी । (प्रश्नार्थक वाक्य)
३. मैं आज रात का खाना नहीं खाऊँगा । (विधानार्थक वाक्य)
४. गाय ने दूध देना बंद कर दिया । (विस्मयार्थक वाक्य)
५. तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए । (आज्ञार्थक वाक्य)

(३) प्रथम इकाई के पाठों में से अर्थ के आधार पर विभिन्न प्रकार के पाँच वाक्य ढूँढ़कर लिखिए ।

(४) रचना के आधार पर वाक्यों के भेद पहचानकर कोष्ठक में लिखिए :

१. अधिकारियों के चेहरे पर हलकी-सी मुस्कान और उत्सुकता छा गई । [-------]
२. हर ओर से अब वह निराश हो गया था । [-------]
३. उसे देख-देख बड़ा जी करता कि मौका मिलते ही उसे चलाऊँ । [-------]
४. वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली । [-------]
५. मोटे तौर पर दो वर्ग किए जा सकते हैं । [-------]
६. अभी समाज में यह चल रहा है क्योंकि लोग अपनी आजीविका शरीर श्रम से चलाते हैं [-------]

(५) रचना के आधार पर विभिन्न प्रकार के तीन-तीन वाक्य पाठों से ढूँढ़कर लिखिए ।

उपयोजित लेखन

'जल है तो कल है' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

C2P7KF